BA-1
Paper-I
Unit-3

Dr. Raj Gopal
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar
MailID:- rajgopal7755@gmail.com

Topic ⇒ Charvaka: Philosophy of Soul
(चार्वाक के आत्मा संबंधी विचार)

भारतीय दर्शन में चार्वाक को छोड़कर सभी दार्शनिक किसी न किसी रूप में आत्मा की सत्ता में विश्वास करते हैं। आत्मा शरीर से भिन्न एक अध्यात्मिक सत्ता है। शरीर नश्वर है किन्तु आत्मा नित्य चिरस्थायी एवं अमर है। गीता में कहा गया है कि - जिस प्रकार व्यक्ति पुराने वस्त्रों को त्यागकर नये वस्त्र पहनते हैं उसी प्रकार आत्मा एक शरीर को त्यागकर दूसरे शरीर धारण करती है। इस प्रकार भारतीय विचारकों की दृष्टि में आत्मा (Soul) का अत्यधिक महत्व है। चार्वाक दर्शन आत्मा का प्रत्यक्ष नहीं होने के कारण उसका अस्तित्व नहीं मानता है।

भारतीय दर्शन में आत्मा के संबंध में अलग-अलग धारणाएँ हैं। जहाँ न्याय वैशेषिक एवं मीमांसा दर्शन चेतना को आत्मा का आगन्तुक गुण मानता है। वहीं जैन सांख्य एवं अद्वैत वेदान्त चेतना को आत्मा का मूल लक्षण मानता है। ये आत्मा को सत्, चित् आनन्द मानते हैं। चार्वाक दर्शन चेतना को वास्तविक मानता है, परन्तु यह चेतना को आत्मा का गुण न मानकर शरीर का गुण मानता है। चार्वाक चेतना से विशिष्ट शरीर को ही आत्मा मानता है। चार्वाक का आत्मा और शरीर

Scanned with CamScanner

के बीच भेद नहीं मानने के कारण इसका आत्मा संबंधित विचार को देहात्मवाद कहा जाता है। चार्वाक आत्मा और शरीर में अभेद संबंध बतलाने के लिए अनेक उदाहरण दिये हैं।

(i) व्यवहारिक जीवन में आत्मा और शरीर में अभिन्नता अनेक वाक्यों से प्रमाणित है। मैं मोटा हुँ, मैं पतला हुँ, मैं लंगड़ा हुँ, मैं काला हुँ इत्यादि ये वाक्य आत्मा और शरीर में एकता प्रमाणित करते हैं। मोटापन, कालापन पतलापन शरीर के ही गुण हैं। अतः आत्मा और शरीर एक ही वस्तु के दो अलग-अलग नाम हैं।

(ii) आत्मा अगर शरीर से भिन्न होता तो मृत्यु के पश्चात आत्मा और शरीर का अलग अलग रुप दिखलाई पड़ता। कोई भी व्यक्ति मृत्यु के समय आत्मा को शरीर से अलग होते हुए नहीं देखा है। शरीर जब तक जीवित है तब तक आत्मा भी जीवित है। अतः शरीर और आत्मा एक है।

(iii) जन्म से पूर्व और मृत्यु के पश्चात आत्मा का अस्तित्व का कोई प्रमाण नहीं है। जन्म के पश्चात चेतना का आविर्भाव होता है और मृत्यु के साथ ही उसका अंत हो जाता है। इस प्रकार से चेतना का अस्तित्व शरीर के अभाव में असंभव है। अतः आत्मा और शरीर एक है।

शरीर से अलग आत्मा की सत्ता नहीं मानते के कारण चार्वाक आत्मा को अजरता, अमरता, नित्यता कुटस्थता, आदि स्वरुप को अस्वीकार करता है। इस आधार

Scanned with CamScanner

पर आत्मा की अमरता का सिद्धान्त, पुनर्जन्म का सिद्धान्त, कर्म नियम आदि का निषेध करता है। यदि आत्मा का पुनर्जन्म होता तो जैसे बचपन में किये गये कर्मों का अनुभव बुढ़ापे में होता है उसी प्रकार आत्मा को भी पहले के जीवन के अनुभवों का स्मरण इस जीवन में होना चाहिए। आत्मा को पूर्व जीवन के स्मृतियों का स्मरण नहीं होता है। इससे प्रमाणित है कि पुर्नजन्म नहीं होता है। जिस प्रकार शरीर मृत्यु के पश्चात भूत में मील जाता है ठीक उसी प्रकार आत्मा भी भूत में विलिन हो जाता है। चार्वाक का कहना है कि "भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः"।

आत्मा के अभाव में स्वर्ग और नरक का विचार खलपतिष हो जाता है। प्राचीन ग्रन्थों में स्वर्ग एक आनन्ददायक स्थान है जहाँ मानव को उसके अच्छे कर्मों का फल मिलता है। इसके विपरीत नरक एक कष्टदायक स्थान है जहाँ मानव के उसके बुरे कर्मों का फल मिलता है। चार्वाक का मानना है कि ब्राह्मणों ने स्वर्ग और नरक की कल्पना समाज में अपने वर्चस्व कायम रखने के लिए एवं जीवन-निर्वाह के लिए किया है। चार्वाक का मानना है कि स्वर्ग और नरक का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं होने के कारण इसका अस्तित्व नहीं है।

मानव मृत्यु के पश्चात स्वर्ग अथवा नरक में वास करते तो वह अपने सगे संबंधियों के दुःख और क्रन्दन से प्रभावित होकर अवश्य लौट आता। लेकिन ऐसा नहीं होता है। अतः स्वर्ग और नरक की अवधारणा एक मिथ्या अवधारणा है। जब स्वर्ग और नरक का अस्तित्व ही नहीं है तो उसके निमित कार्य करना मानव के अज्ञान और अविवेक का परिचायक है।

चार्वाक का मानना है कि स्वर्ग और नरक का अस्तित्व इसी संसार में निहित है। इस संसार में जो व्यक्ति सुखी है वह स्वर्ग में है और जो व्यक्ति दुःखी है वह नरक में है। स्वर्ग और नरक सांसारिक सुखों, दुःखों का सांकेतिक नाम है। इसलिये चार्वाक ने कहा है कि 'सुखमेव स्वर्गम्' 'दुःखमेव नरकं' इस लोक के अतिरिक्त चार्वाक अन्य लोक की सत्ता का खंडन करता है। अतः चार्वाक के अनुसार स्वर्ग और नरक की अवधारणा एक मिथ्या अवधारणा है।

चार्वाक दर्शन के "आत्मा संबंधित विचार" के उपरोक्त विवेचन के आलोक में हम निष्कर्षतः कह सकते हैं कि चार्वाक आत्मा की स्वतंत्र सत्ता को अस्वीकार कर शरीर को ही आत्मा मानता है। चेतन शरीर को ही आत्मा मानने के कारण, आत्मा की अमरता का सिद्धान्त, कर्म-नियम का सिद्धान्त, पुनर्जन्म का सिद्धान्त सभी निराधार हो जाता है। वे स्वर्ग और नरक को पुरोहितों की काल्पनिक धारणाएँ मानते हैं। इस प्रकार से आत्मा, ईश्वर, स्वर्ग, नरक, पाप पुण्य का निषेध कर केवल प्रत्यक्ष जगत को वास्तविक मानते हैं। प्रत्यक्ष जगत को एकमात्र सत्य मानने के कारण चार्वाक दर्शन केवल जीवन के सुखों में लिप्त है। अतः चार्वाक के जड़वाद का अंतिम परिणति सुखवाद हो जाता है।